मैं हूँ - हेलेन केलर

ब्रैड मेत्ज़र, चित्र : क्रिस्टोफर हिंदी : विदूषक

जब मैं छोटी थी, तो मैं बिल्कुल तुम्हारे ही जैसी थी. मुझे खेलना अच्छा लगता था.
मुझे अपने कुत्ते से बहुत प्यार था.
मुझे रंग-बिरंगे चमकीले फूल देखना, बहुत अच्छा लगता था.
मुझे लोगों की नक़ल करना भी अच्छा लगता था.
छह महीने की उम्र में मैं यह शब्द बोलने लगी थी....

एक साल की उम्र में ही मैंने चलना शुरू कर दिया.

एक शब्द मुझे बहुत पसंद था, वो था - वाह! वाह!

मैं बिल्कुल किसी अन्य बच्चे जैसी ही थी. ठीक हैं न?

पर एक चीज़ ने मुझे अलग किया.

जब मैं उन्नीस महीने की थी तब मैं बहुत बीमार पड़ी.

डॉक्टर्स ने कहा कि मैं जिंदा नहीं बचूंगी.

मैं जिंदा तो बची, पर बीमारी ने मुझे अँधा और बहरा बना दिया.

अब मुझे दुनिया ऐसी दिखने लगी.

अपनी आँखें बंद करो और
अपने कानों को हाथों से ढंको.
मुझे कुछ भी नहीं दिखता था.
मुझे कुछ भी सुनाई नहीं देता था.
बिल्कुल ठीक.

कुछ भी नहीं.

पता है मुझे, यह पढ़ कर तुम डर गए होगे.

मुझे भी बहुत डर लगा था.

उस ज़माने में लोग, अंधे / बहरे बच्चों के बारे में बहुत कम जानते थे.

रिश्तेदार मुझे राक्षस बुलाते थे!

उनका कहना ठीक था, मेरा व्यव्हार ठीक नहीं था. क्यूँकि, मैं बहुत निराश थी.

अपनी स्याह ज़िन्दगी में मुझे यह भी पता नहीं था कि -

क्या कोई मुझे प्यार करता है? क्या कोई मेरी देखभाल करता है?

मैं जो कुछ भी करती, उसे न तो मैं देख पाती, और न ही कुछ सुन पाती.

पांच साल की उम्र तक मैंने लोगों से बातचीत करने के कुछ तरीके ढूँढ निकाले.

“हाँ” कहने के लिए मैं अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाती.

“न” कहने के लिए मैं अपना सिर बाएं-दाएं हिलाती.

“पिताजी” कहने ने लिए मैं उनका चश्मा पहनने की नक़ल करती.

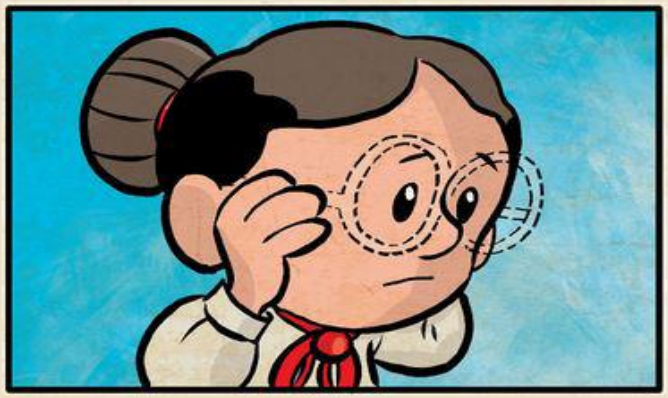

“माँ” कहने के लिए मैं हाथ को अपने गाल पर रखती.

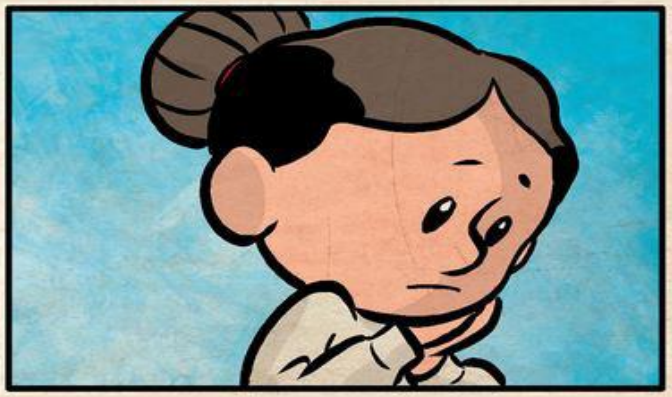

अपनी छोटी बहन के लिए मैं यह करती.

और जब मैं ठण्ड से कांपती तो उसका असली मतलब होता...

पर इस सबके बावजूद मैं अपने कुत्ते - बेले को खेलने के लिए तक नहीं बुला पाती थी.
न बोल पाने के कारण, मैं अपने कुत्ते को नहीं बुला पाती थी.
मैं सिर्फ अपने कुत्ते से खेलना चाहती थी.

दुःख यह था, कि अब मैं एक काली और खामोश दुनिया की, आदी हो चुकी थी.

लोगों ने मेरे माँ-बाप को सलाह दी – इसे छोड़ दो, त्याग दो.

उन्होंने कहा कि मैं अपनी ज़िन्दगी में कुछ भी अच्छा नहीं कर पाऊंगी.

मेरे माँ-बाप ने उनकी बातों को अनसुना किया.

एक अन्य अंधी / मूक लड़की के बारे में पढ़ने के बाद, मेरे माँ-बाप को वो मिला,

जो मेरी बीमारी के बाद वो छोड़ चुके थे – आशा और उम्मीद.

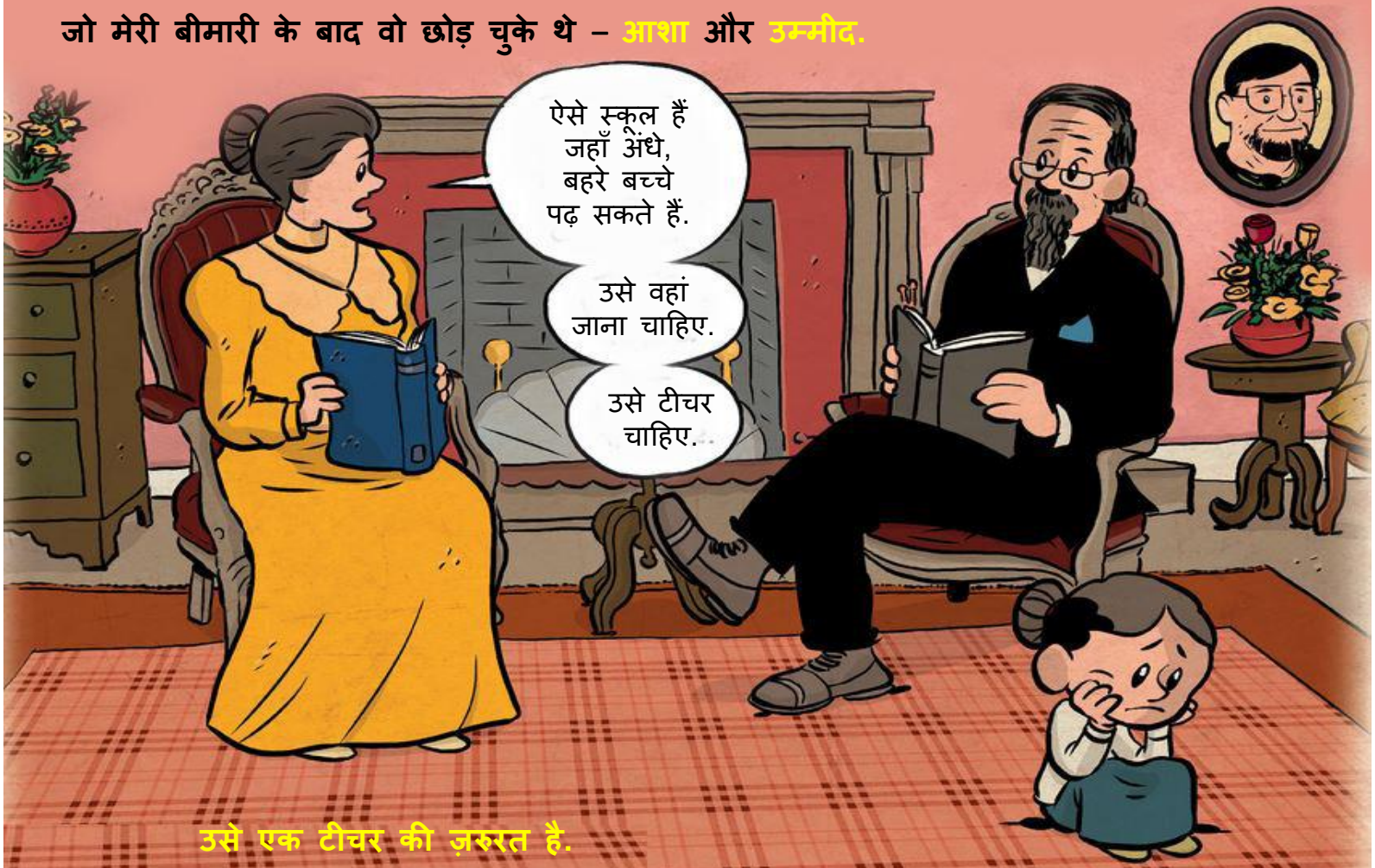

उसे एक टीचर की ज़रुरत है.

पर मुझे कोई कल्पना नहीं थी, कि उससे मेरी ज़िन्दगी कैसे बदलेगी.

शायद वो मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन था.

मैं सिर्फ छह साल की थी.

माँ के उतावलेपन से ही मैं समझ गई कि आज कुछ बड़ा होने वाला है.

मैं बरामदे में खड़ी इंतज़ार कर रही थी. सूरज की धूप मेरे चेहरे पर चमक रही थी.

कोई आया – मुझे उसके पदचाप सुनाई दिए. मैंने सोचा माँ आ रही हैं –

इसलिए मैं उनके पास गई. उसने मुझे अपनी गोद में उठा लिया.

उनका नाम ऐनी सुलिवन था.
यही वो टीचर थीं,
जिन्होंने मेरी ज़िन्दगी बदल डाली.

पहले ही सबक में उन्होंने मुझे एक खिलोने वाली गुड़िया दी.
कुछ देर खेलने के बाद उन्होंने मेरी हथेली पर अपनी उंगली
से गुड़िया शब्द लिखा.

मैंने ज़रूर, कुछ तो महसूस किया.
तब तक अक्षरों / शब्दों और उनके मतलब के बारे में मुझे कुछ पता नहीं था.

एक दिन हम दोनों बहस कर रहे थे.

मिस सुलिवन मुझे “मग” और “पानी” शब्द सिखाने की कोशिश कर रही थीं.

मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने अपनी नई गुड़िया को ज़मीन पर पटक दिया.

तब मुझे कुछ ज्यादा ही गुस्सा आता था.

तब मेरे लिए सबकुछ बहुत मुश्किल था.

क्यूँकि मैं बहुत निराश थी.

मेरी टीचर अपना सब्र कभी नहीं खोती थीं.

फिर वो मुझे बाहर ले गईं.

बाहर एक नल से बहते पानी के नीचे उन्होंने मेरा हाथ रखा.

फिर मेरी दूसरी हथेली पर उन्होंने पानी शब्द के हिज्जे लिखे.

पानी

(W-A-T-E-R)

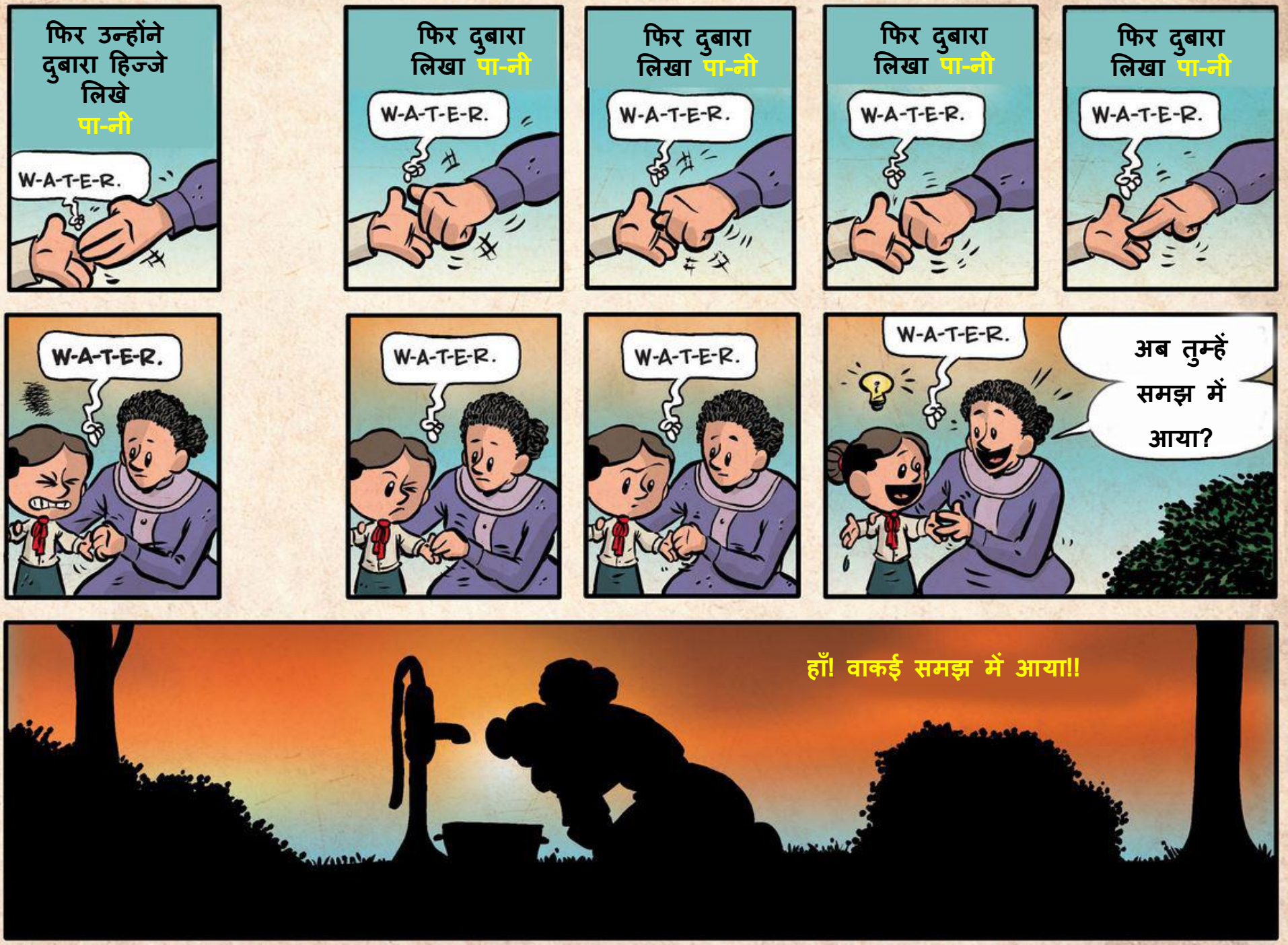
फिर उन्होंने दुबारा हिज्जे लिखे पा-नी
W-A-T-E-R.
फिर दुबारा लिखा पा-नी
W-A-T-E-R.
फिर दुबारा लिखा पा-नी
W-A-T-E-R.
फिर दुबारा लिखा पा-नी
W-A-T-E-R.
फिर दुबारा लिखा पा-नी
W-A-T-E-R.
W-A-T-E-R.
W-A-T-E-R.
W-A-T-E-R.
W-A-T-E-R.
अब तुम्हें समझ में आया?
हाँ! वाकई समझ में आया!!

उस दिन मुझे पहली बार यह समझ में आया - कि हर चीज़ का एक नाम होता है.

फिर मैं जिस चीज़ को भी छूती, वो मेरे लिए जिन्दा हो जाती.

जब कभी मैं अपनी टीचर की हथेली पर कुछ लिखती तो वो उसे समझ जातीं.

अब कोई तो मेरी बात समझने वाला था.

जब तुम कुछ नया सीखने की कोशिश करते हो, तो वो हमेशा बहुत मुश्किल होता है.

मैंने शब्दों से शुरू किया.

धीरे-धीरे मेरी शब्दावली बढ़ने लगी.

अंत में मैंने **प्यार** शब्द का मतलब समझा.

मैंने अपनी टीचर को कुछ फूल दिए थे. फिर उन्होंने मेरी हथेली पर लिखा...

“वो वहां होता है,” उन्होंने उसे लिखा और साथ में मेरे दिल को भी थपथपाया.

मेरी उलझन अभी भी ख़त्म नहीं हुई.

जिस चीज़ को मैं छू न सकूं उसे मेरे लिए समझना मुश्किल था.

मुझे कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा.

टीचर मुझे प्यार दिखा क्यूं नहीं सकतीं?

फिर उन्होंने मुझे समझाया....

उस क्षण मेरी पूरी दुनिया बदल गई.

मुझे ऐसा लगा जैसे सभी सम्बन्धियों और मेरे बीच, अदृश्य तार खिंचे हों.

ज़रा अपनी आँखें बंद करो.

तुम भी उन्हें महसूस कर सकते हो – परिवारजनों और मित्रों से अपना सम्बन्ध.

मेरे लिए जीवन फिर भी आसान नहीं था.

दृष्टि के बिना, मैं लोगों के चेहरे नहीं देख पाती थी.

ध्वनि के बिना, मैं लोगों की बातें नहीं सुन पाती थी.

पर मुझे सबसे बड़ी सफलता तब मिली जब मैंने

वो करना शुरू किया जो अभी अभी आप कर रहे हैं -

पढ़ना

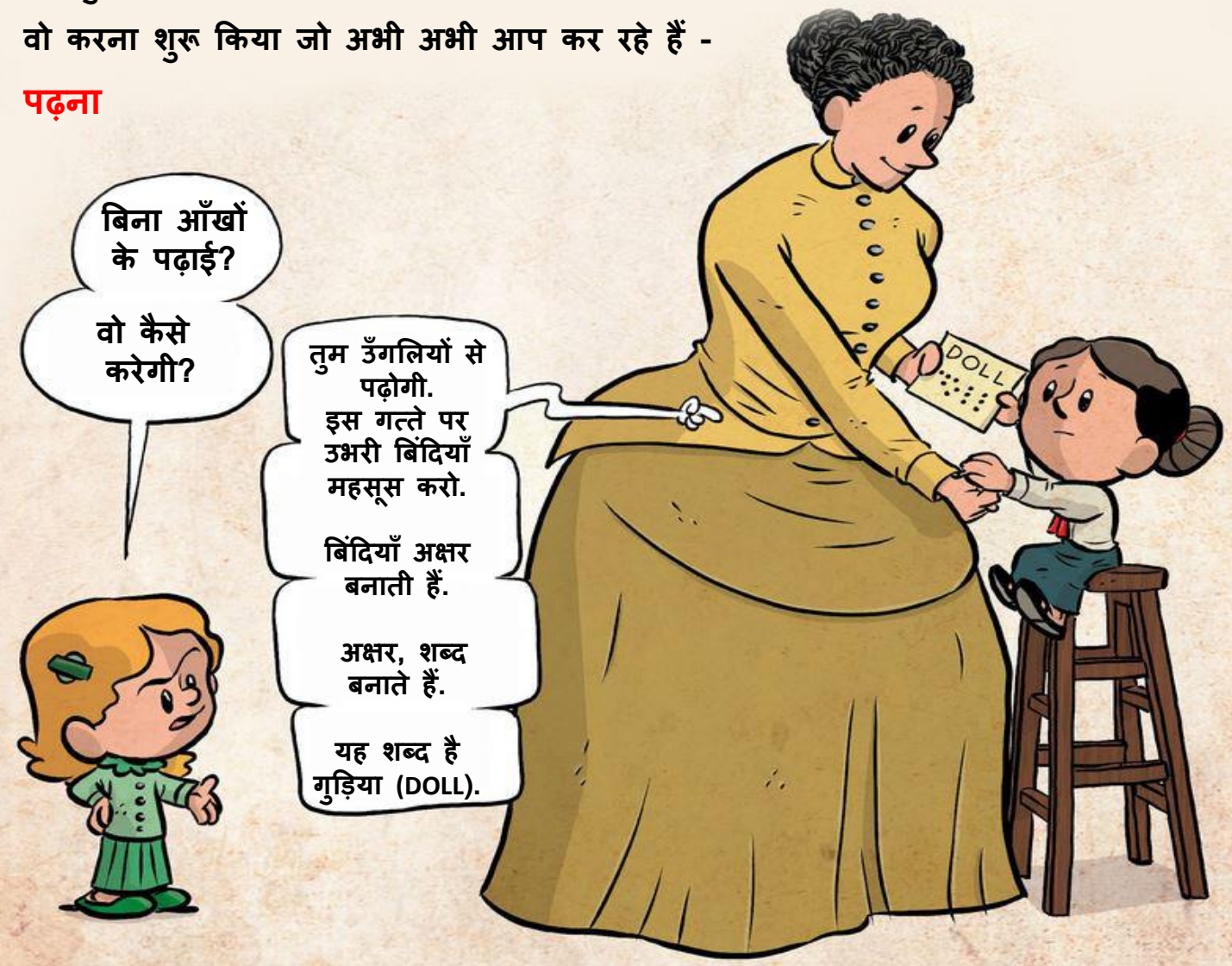

अभ्यास करते समय मैं हर शब्द को ठोस वस्तु के साथ मिलाती और फिर वाक्य बनाती.
यह मेरा सबसे प्रिय खेल बन गया.
इस खेल को हम घंटों खेलते रहते.
क्या तुम इस वाक्य को खोज सकते हो?
अल्मारी में लड़की

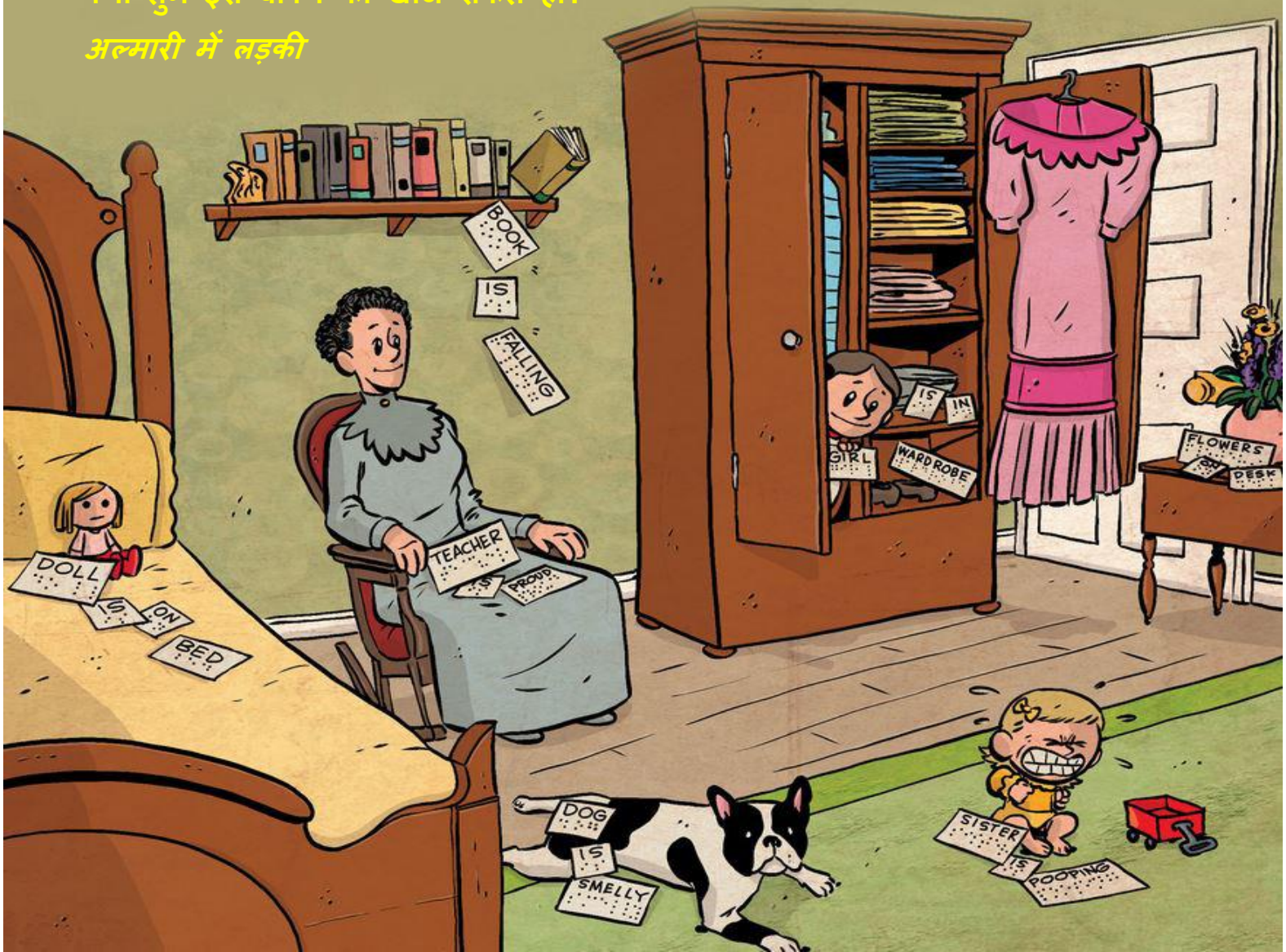

उसके बाद मैंने असली किताबें पढ़ना शुरू किया.

बिल्कुल तुम्हारी ही तरह.

बस एक अंतर था. मेरी किताबें ब्रेल में थीं. उनमें अक्षर, उभरी हुई बिंदियों से लिखे जाते थे, और उन्हें उंगली से छू-छू कर पढ़ना पड़ता था.

शुरू में मुझे कुछ दिक्कतें आईं.

पर फिर मैं उसकी अभ्यस्त हो गई.

यहाँ पर बिंदियों में मेरा नाम हेलेन (H-E-L-E-N) लिखा है.

यह हैं ब्रेल के सभी अक्षर.

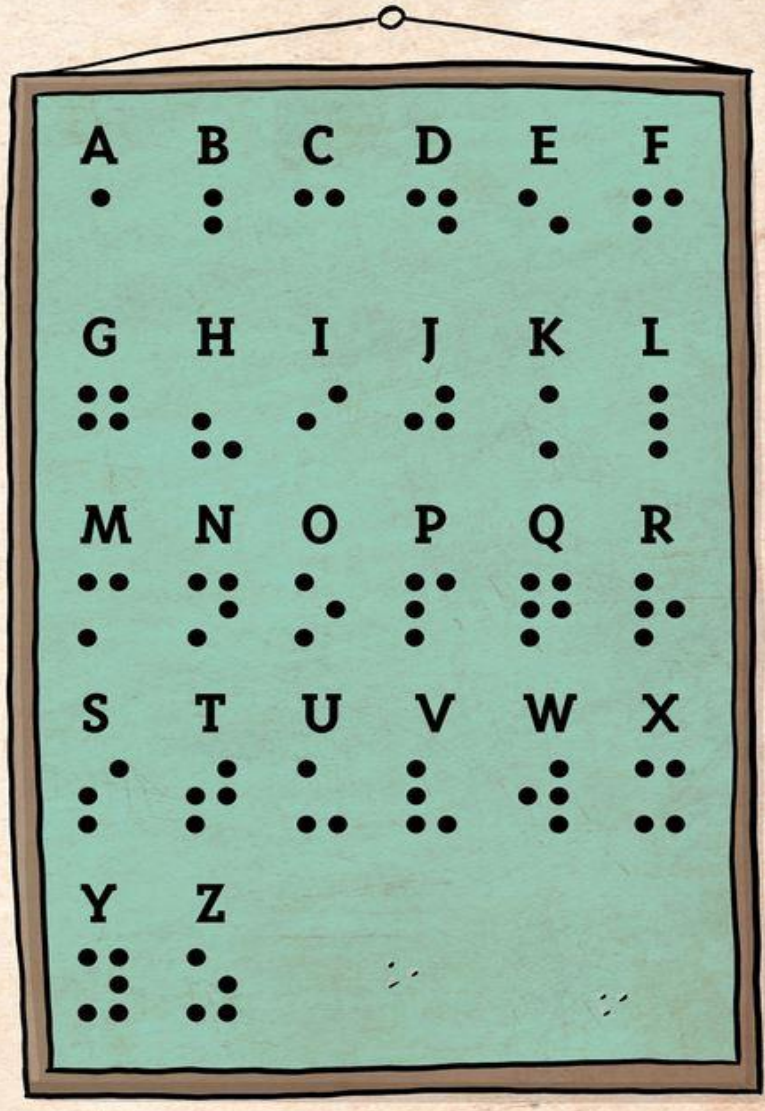

पढ़ने के अनुभव को मजेदार बनाने के लिए टीचर मुझे बाहर ले जाती थीं.
उन्हें पता था की चेहरे पर पड़ती धूप और चीड़ की पत्तियों की खुशबू, मुझे बेहद पसंद थी.
मैंने अपनी किताबों को छू-छू कर इतनी बार पढ़ा कि उनकी उभरी बिंदियाँ तक घिस गयीं.

उन पुस्तकों में *"द अरेबियन नाइट्स"* *"रोबिनसन क्रूसो"* शामिल थीं.
पर मेरी सबसे प्रिय पुस्तक थी *"लिटिल वीमेन"*.
पुस्तकों में मेरी मुलाकात उन साहसी लड़कों और लड़कियों से होती –
जो देख और सुन सकते थे.

मिस सुलिवन ने मुझे जो सबसे बेहतरीन पाठ पढ़ाया वो था – पौधों का विकास.

जब मैं नौ बरस की हुई तो मैं बोलना सीखना चाहती थी.

मिस सुलिवन मेरी आगे की पढ़ाई को लेकर चिंतित थीं. उन्हें लगा कि मैं निराश हो जाऊंगी. पर अब मुझे कोई नहीं रोक सकता था.

मेरी मदद के लिए मिस सुलिवन मुझे, साराह फुलर नाम की एक अन्य टीचर के पास ले गईं. वो मेरा हाथ अपने चेहरे पर रखतीं. बोलते समय वो मुझे अपनी जीभ और होटों को छूने देतीं. इससे मैंने सही तरीके से आवाज़ निकालना सीखा.

मैं एक घंटे में, अंग्रेजी के इन अक्षरों का उच्चारण सीख गई – M, P, A, S, T और I.

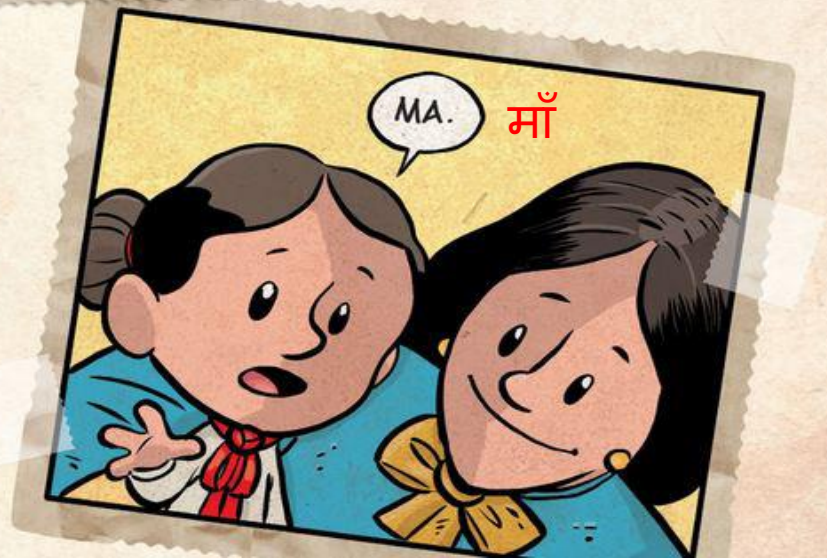

अब मैं अपने कुत्ते को बुला सकती थी. मेरे बुलाने पर वो जल्दी से आता था.

सातवें पाठ में मैंने यह वाक्य बोला.

इस वाक्य को मैंने बार-बार, अनेकों बार दोहराया.

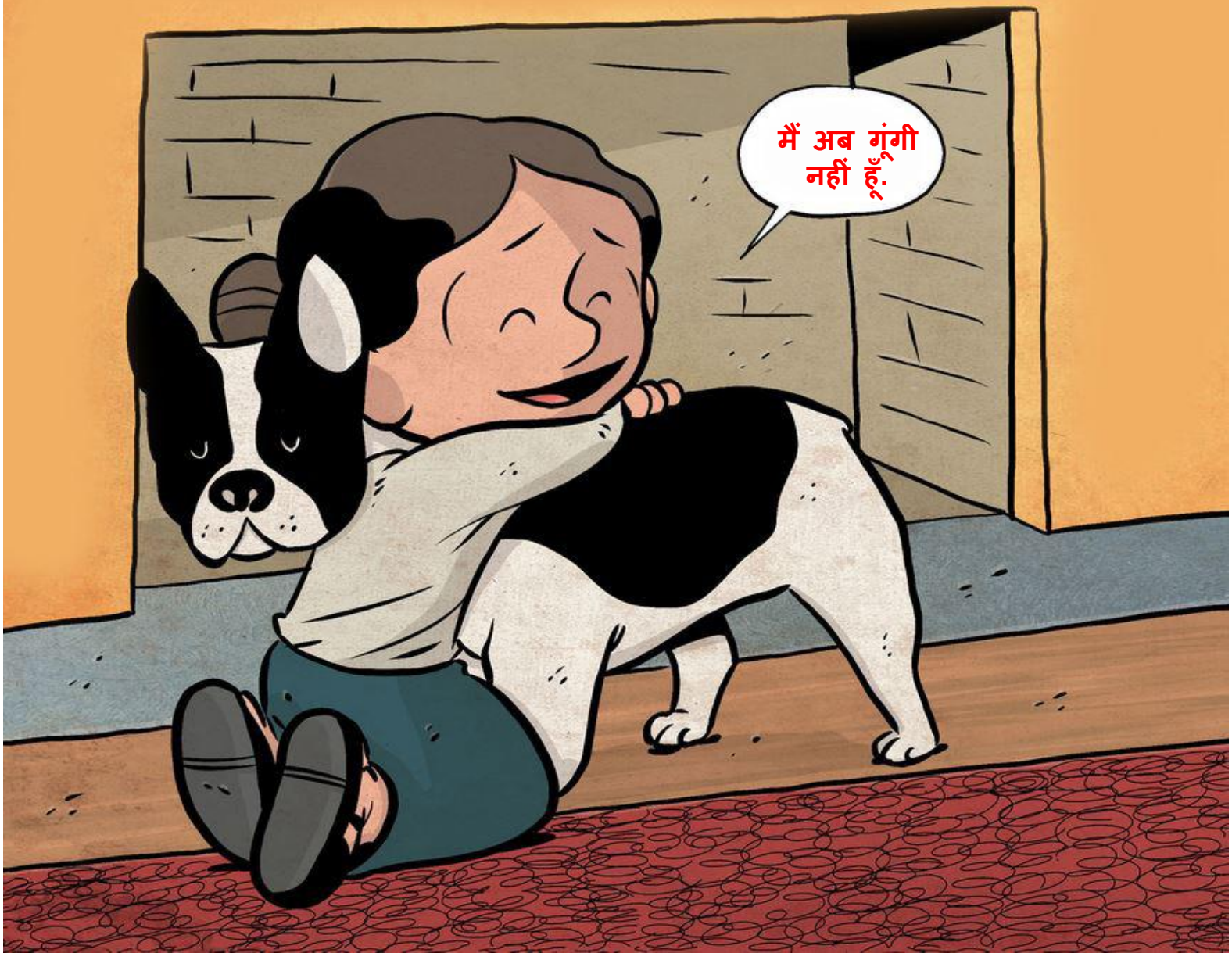

जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मैंने इंग्लिश तो सीखी ही.
साथ में मैंने फ्रेंच और जर्मन भाषाएँ भी सीखीं.
उच्च शिक्षा के लिए मैं रेडक्लिफ कॉलेज, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी जाना चाहती थी.

हार्वर्ड में ज़्यादातर किताबें ब्रेल में उपलब्ध नहीं थीं.
इसलिए बहुत सी पाठ्य-पुस्तकें मिस सुलिवन, मेरी हथेली पर लिखती थीं.
इस प्रकार मेरी पढ़ने में रूचि पैदा हुई.
मिस सुलिवन में बेहद धैर्य था और वो बिलकुल निस्स्वार्थ थीं.

मैं कॉलेज में पढ़ने वाली पहली, नेत्रहीन और बहरी छात्र थी.

उसके बाद अनेकों ऐसे छात्र कॉलेज गए.

बड़े होने पर मैंने 12 किताबें लिखीं और 34 देशों की यात्रा की.

मेरे महत्वपूर्ण योगदान के कारण ही, अन्य विकलांग छात्र भी शिक्षा पा सके.

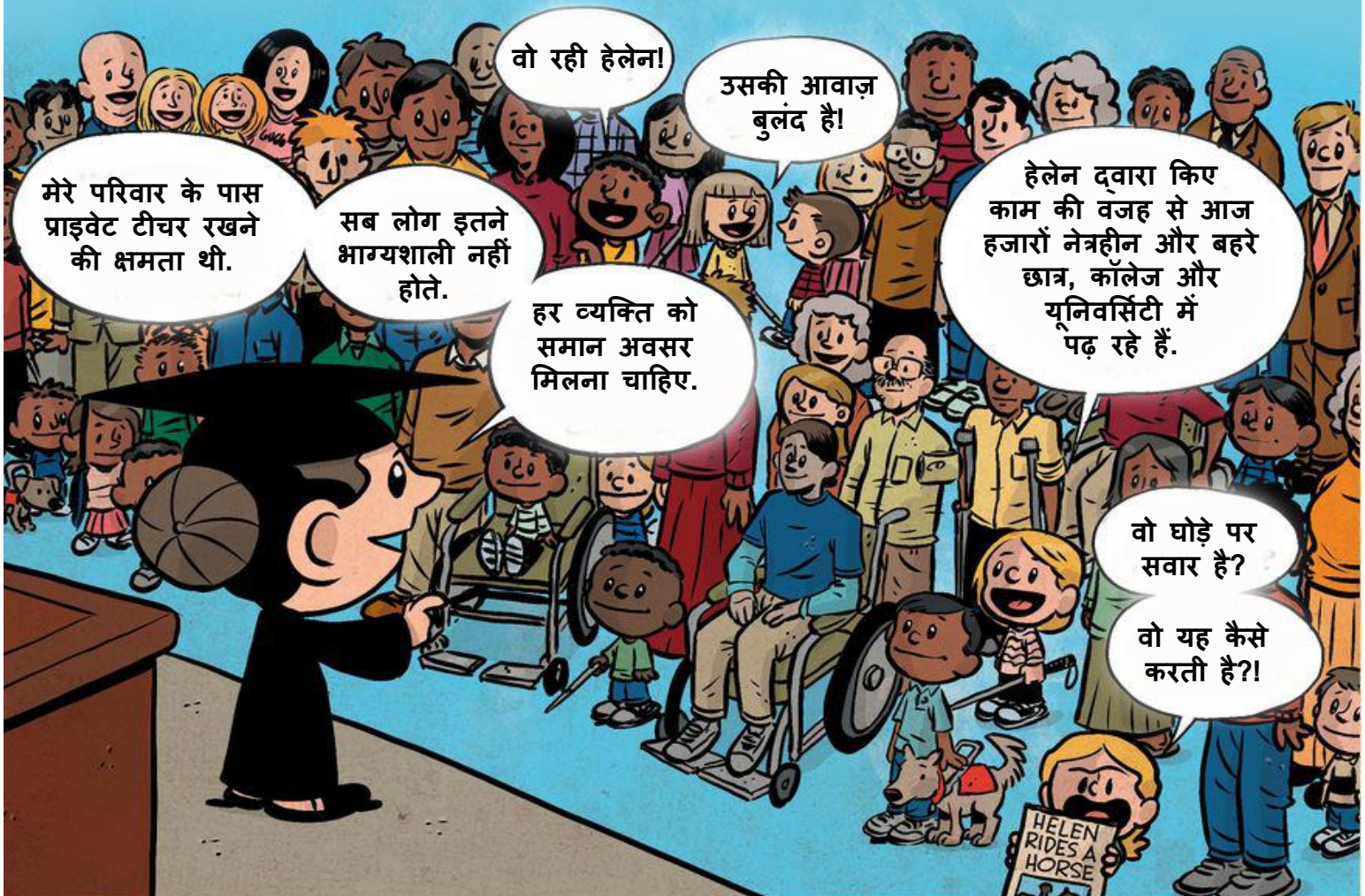

यह तो बस शुरुआत थी.

नेत्रहीनों और बहरों को मदद के साथ-साथ मैंने सामाजिक परिवर्तन के लिए भी काम किया – महिला उत्थान के लिए, गरीबों की रोज़ी-रोटी के लिए, और सबसे पिछड़े लोगों की सेवा के लिए.

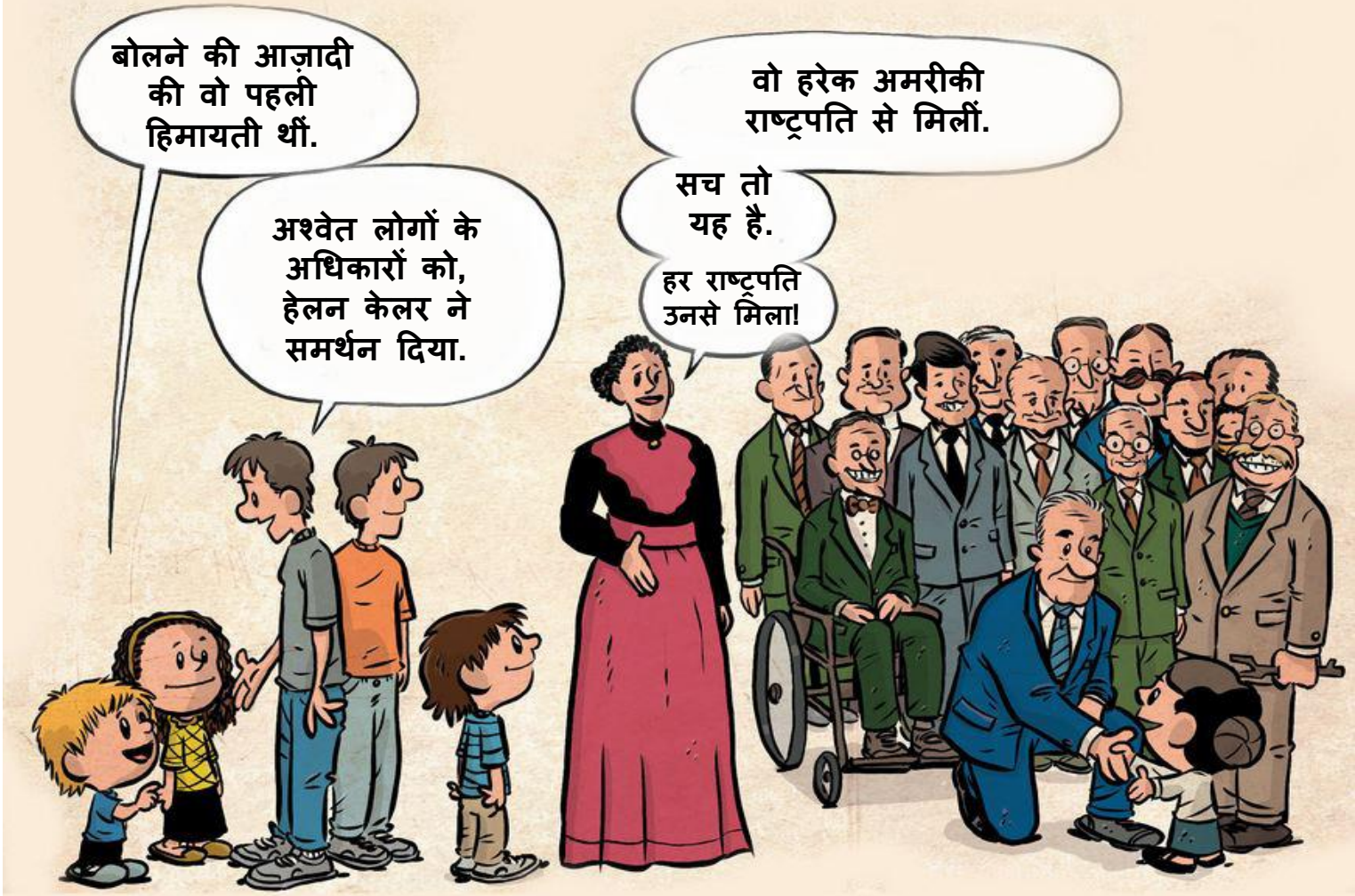

आज *अमेरिकन फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड* और *हेलेन केलर इंटरनेशनल* दुनिया भर में नेत्रहीनों और बहरों की सहायता करती हैं.

लोगों ने कहा कि मैं “अलग” हूँ.

उन्होंने कहा मैं कभी भी सामान्य नहीं बनूंगी.

पर सच कुछ अलग ही है. “सामान्य” ज़िन्दगी जैसा कुछ नहीं होता.

हम सब फूल हैं जिन्हें पानी की ज़रुरत है.

हममें से हरेक व्यक्ति में, अनेकों संभावनाएं हैं.

हम सब मुश्किलों का मुकाबला करके उन्हें जीत सकते हैं.

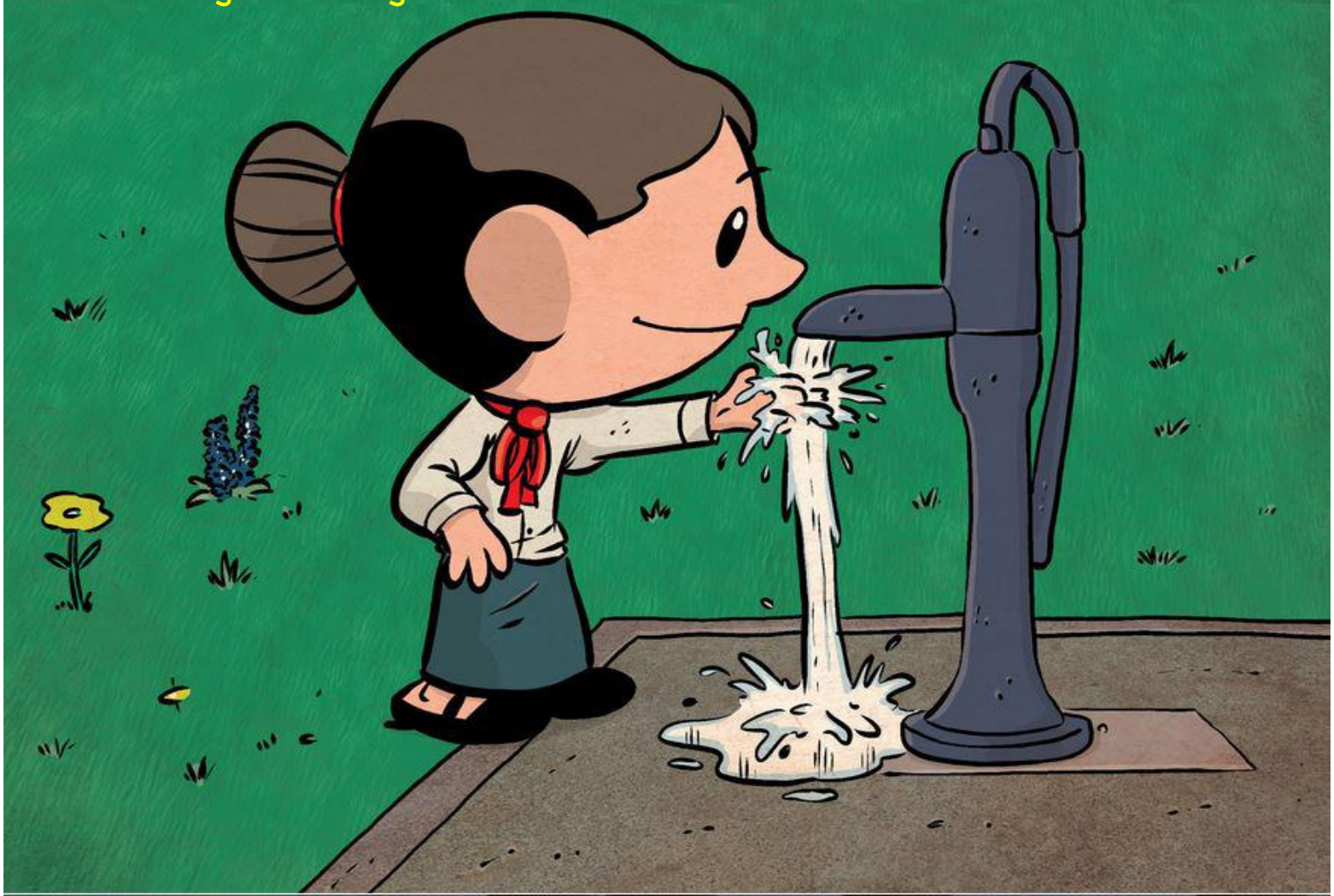

ज़रा मुझे देखो.

मेरे शब्द सुनो.

मैं देख नहीं सकती तो क्या, मेरे पास जीवन-दृष्टि है.

मैं सुन नहीं सकती तो क्या, मेरी आवाज़ तो है.

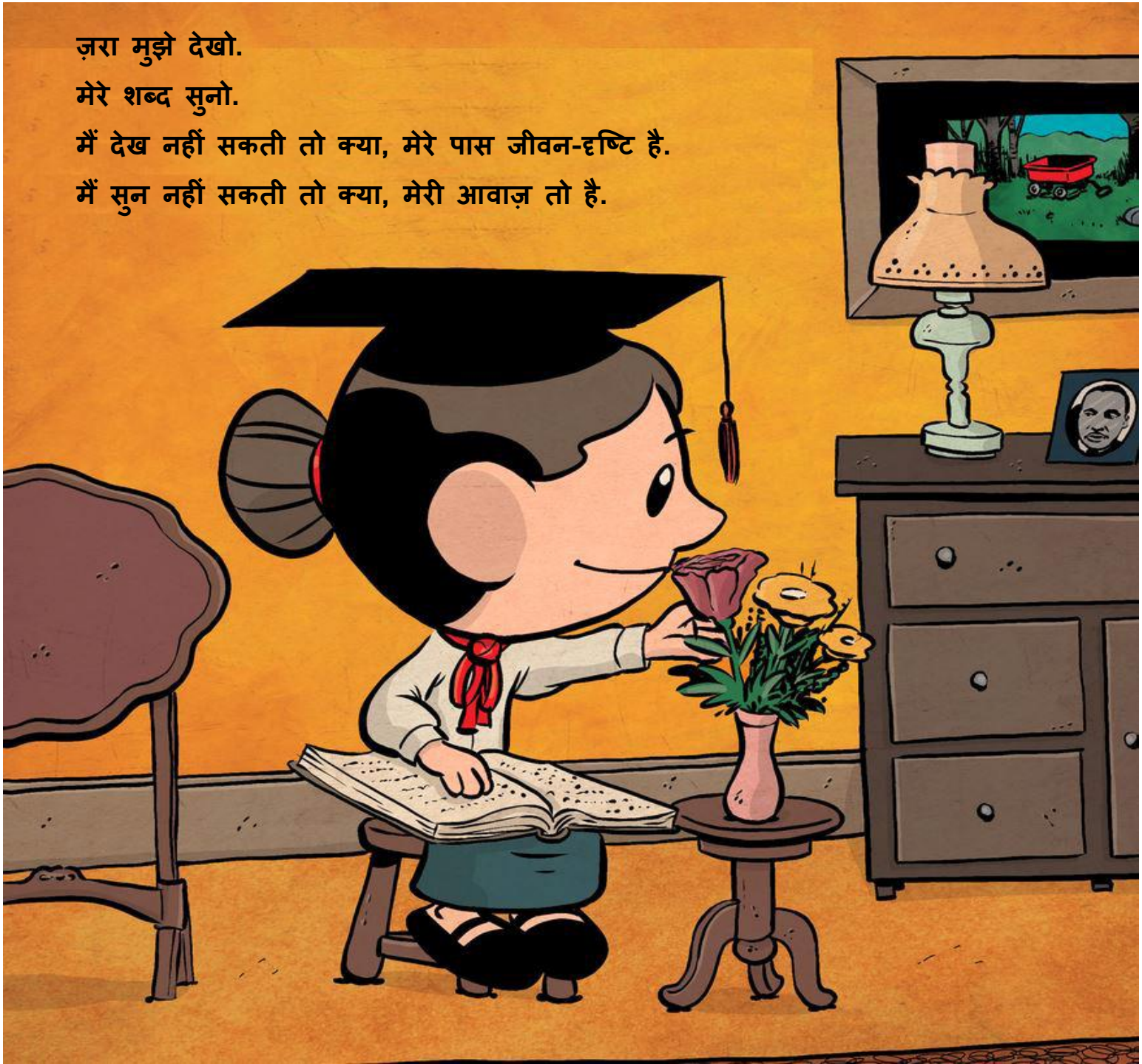

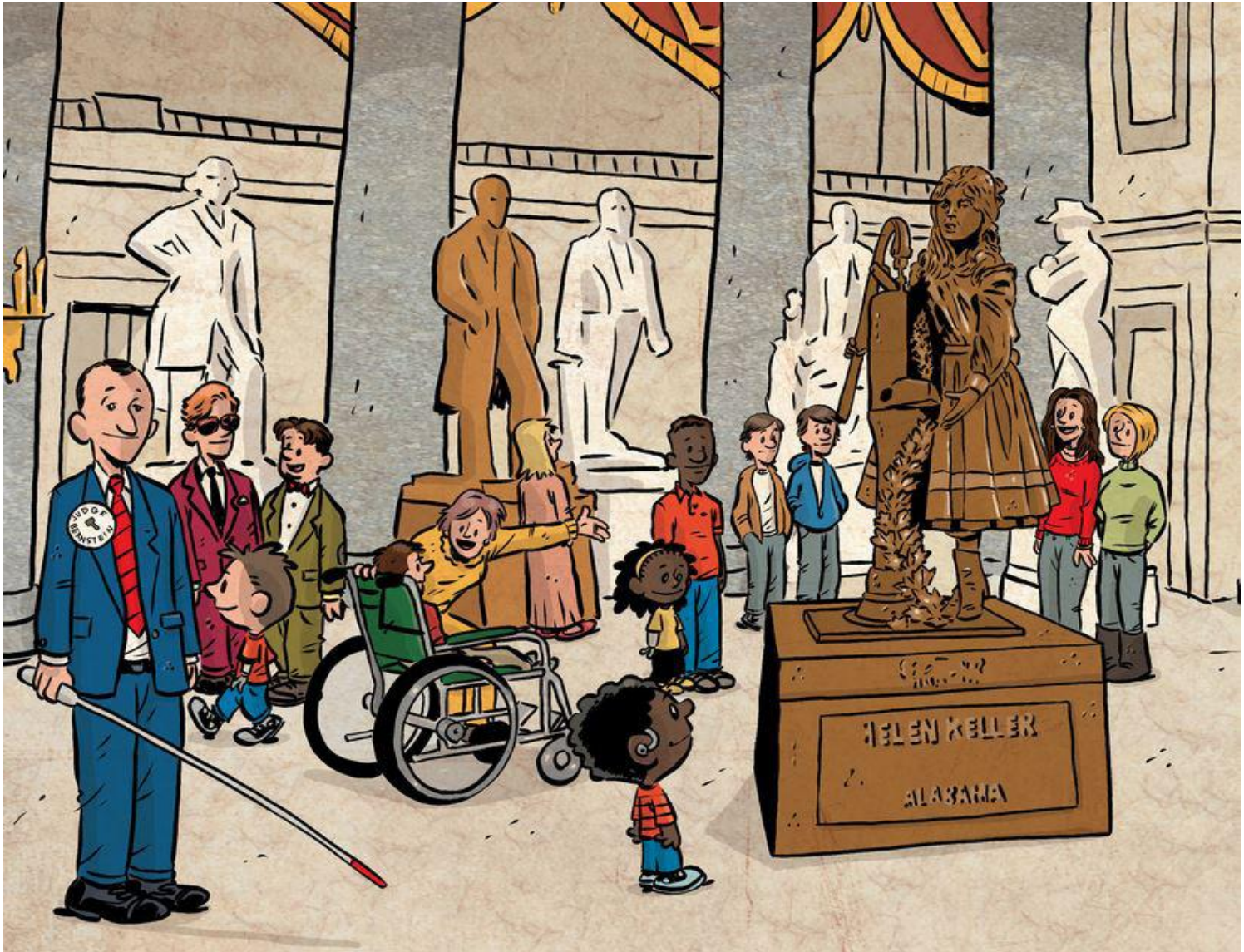

जीवन को एक पहाड़ समझो, जिस पर तुम्हें चढ़ना है.

ऊपर पहुँचने का कोई एक सही रास्ता नहीं है.

सभी अपने-अपने हिसाब से, टेढ़े-मेढ़े रास्ते बनाते हैं.

हो सकता है तुम कभी फिसलो, और नीचे गिरो.

पर अगर तुम उठकर खड़े होकर चढ़ते रहोगे, तो मैं वादा करती हूँ कि...

....तुम एक दिन पहाड़ की चोटी पर ज़रूर पहुंचोगे.

दृढ निश्चय करो, कि तुम्हें कोई न रोके.
हम अपनी ज़िन्दगी को जो चाहें बना सकते हैं.
मुश्किलें तो हमेशा सामने आएँगी.
पर उनपर काबू करने के तरीके भी होंगे.

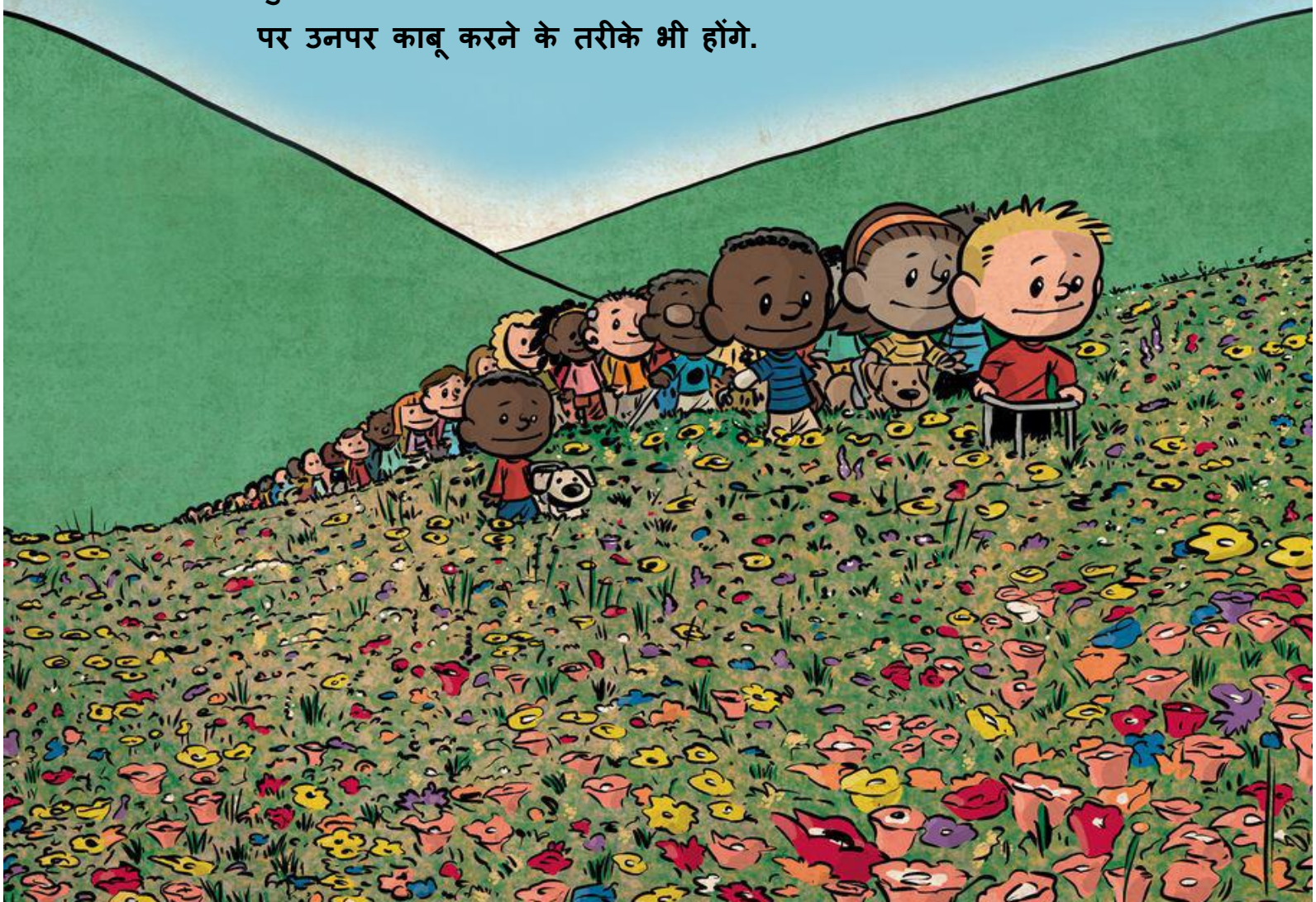

मैं हेलेन केलर हूँ

मुझे कोई नहीं रोक सकता, आगे बढ़ने से.

हाँ, और आख़री बात.

उस टीचर को धन्यवाद दो, जिसने सबसे मुश्किल समय में तुम्हारी मदद की.

"दुनिया की सबसे सुन्दर चीज़ों को न तो देखा जा सकता है और न ही छुआ जा सकता है. उन्हें बस दिल में महसूस किया जा सकता है." - **हेलेन केलर**

समय-रेखा Timeline

जून 27, 1880	फरवरी, 1882	मार्च 3, 1887	अप्रैल 5, 1887	1889
JUNE 27, 1880	FEBRUARY 1882	MARCH 3, 1887	APRIL 5, 1887	1889
टूसकुम्बिया, अल्बामा, अमरीका में जन्म	बीमारी के बाद देखने, सुनने की क्षमता ख़त्म हुई	ऐनी सुलिवन, हेलेन केलर की टीचर बनीं	हेलेन ने पहला शब्द पानी (WATER) लिखा	मेसाचुसेट्स में पर्किन्स इंस्टिट्यूट फॉर द ब्लाइंड में पढ़ने गईं

हेलेन आयु
8 वर्ष,
ऐनी सुलिवन
के साथ

हेलेन अपने कुत्ते के साथ

हेलेन, एलेअनोर
रूज़वेल्ट के होंट
छूकर उनकी बातें
"सुन" रही हैं.

1890 — साराह फुलर ने हेलेन को बोलना सिखाया

1903 — पहली किताब छपी *"द स्टोरी ऑफ़ माय लाइफ"*

1904 — हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से स्नातक

1924 — *फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड* के साथ

OCTOBER 20, 1936 — ऐनी सुलिवन की मृत्यु

SEPTEMBER 1964 — *प्रेसिडेंट मैडल फॉर फ्रीडम* पुरुस्कार

JUNE 1, 1968 — कनेक्टिकट में देहांत

मैं हूँ - हेलेन केलर

मुझे कोई नहीं रोक सकता!